कवि सिद्धिनरसिंहमल्ल

सम्पादक

डा० शैलेन्द्रमोहन झा

एम० ए०; पी-एच० डी०, डी० लिट्

Scanned by CamScanner

सिद्धि नरसिंह मल्ल

डा० शैलेन्द्र मोहन झा
एम्०ए०; पी-एच० डी०; डी० लिट्०
सी० एम्० कॉलेज, दरभंगा।

प्रकाशक
पुस्तक केन्द्र
लालबाग, दरभंगा

Scanned by CamScanner

SIDDHI NARSINGH MALLA

(C) Dr. S. M. JHA

● प्रस्तोता—मिथिला रिसर्च सोसाइटी,
लहेरियासराय, दरभंगा ।

● संस्करण—प्रथम, १९६९ ।

● प्रकाशक—पुस्तक केन्द्र, लालबाग, दरभंगा

● मुद्रक—पंचायत प्रेस, लहेरियासराय ।

Scanned by CamScanner

निवेदन

. मैथिलीक प्राचीन साहित्यक विपुल अंश नेपालक पार्वत्य नीड़ मे सुरक्षित रहि औखन अपन अस्तित्त्वक उद्घोष कऽ रहल अछि। मिथिला मे रचित मैथिली साहित्यक महत्त्वपूर्ण सामग्रीक परिचय त सुधी समाज के निस्सन्देह नेपाले सँ प्राप्त भेल अछि। एकर संगहि नेपाल स्वतः प्रचुर परिमाण मे मैथिली साहित्यक सर्जन भूमि रहल। मल्ल शासनकाल मे मैथिली भाषा काठमाण्डू, पाटन ओ भक्तपुर एहि तीनू राज्यक राजभाषा छल। राज्याश्रय प्राप्त कय एतय मैथिली साहित्यक जे अभ्युदय भेल ओ नेपाल नरेश लोकनिक कीर्त्तिमान बनल अछि। ओ लोकनि केवल मैथिलीक कवि-नाटककार लोकनि कें पुरस्कृत एवं प्रोत्साहित नहि कैलन्हि अपितु स्वयं काव्य नाटकादिक रचना कय अपन सहृदयता ओ काव्यनुराग कें चिरस्थायी बना गेलाह।

मुदा ई सत्य जे मैथिलीक ई अनन्त राशि अद्यावधि इतिहासक अल्पज्ञात अध्याय बनल अछि। मैथिली-साहित्यक क्रमबद्ध परम्पराक अनुशीलन मे एकर परिज्ञान कतेक आवश्यक ओ अनिवार्य अछि तकर स्पष्टीकरणक प्रयोजन नहि पड़त। प्रस्तुत पुस्तक चाही दिशा मे एक गोट लघु मुदा प्रयोजनीय प्रयास थीक।

नेपालक मल्ल शासक लोकनि मे पाटन नरेश सिद्धि नर-

Scanned by CamScanner

सिंह मल्ल, मैथिलीक प्रति अपन अनुरागक लेल सुप्रसिद्ध छथि। एकरहि दिग्दर्शनक लेल प्रस्तुत पोथी मे हुनक व्यक्तित्व पर किञ्चित प्रकाश दैत हुनक स्वकृत पद केँ संकलित कैल गेल अछि। एहि पद सभक आकर स्रोत अछि—रागतरंगिणी, राग भजन संग्रह ओ भाषा-गीत-संग्रह। रागतरंगिणी संगीत-शास्त्रक प्रकाशित ओ प्रसिद्ध पुस्तक अछि जाहि मे एकर रचनाकार लोचन आन कविक पदक संग-संग सिद्धि नरसिंहोक पद केँ उद्धृत कैने छथि। शेष दुनू पोथी हस्तलेख अछि जे नेपालक राष्ट्रीय अभिलेखालय मध्य अनुरक्षित अछि।

राग-भजन-संग्रह [प्र० ३७९] मे कुल पदक संख्या ५२ अछि। एहि मे ३५ टा पद केवल भक्तपुर नरेश जगज्ज्योतिर्मल्ल रचित अछि। शेष मे विद्यापति, गोविन्द ओ वंशमणि मे प्रत्येक केर दू-दूटा पद, चतुर चतुरभुजक चारिटा पद, सदानन्द, बुद्धिनाथ, नृपति सिंह, सुकवि, नरमेदि मे प्रत्येक केर एक-एकटा पद तथा दूटा पद भणिता–विहीन अछि। एतय ई ज्ञातव्य जे नृपति सिंह, सिद्धि नरसिंहेक नामान्तर थीक।

दोसर हस्तलेख भाषा–गीत–संग्रह (राष्ट्रीय पुस्तकालय, क्रमाङ्क ६९६१) मे कुल एक सै छेआलिसटा पद संकलित भेटैछ। एहि ग्रन्थ मे विद्यापति (६८), चतुर चतुरभुज (१२), गोविन्द (१२), सिद्धि नरसिंह (७), नृप सिंह (१), सिंह नृपति (४), दशावधान (५), लखिमीनाथ (२), कंसनारायण (१), भिखारी मिश्र–कविराज (२), काशिनाथ (१), गजसिंह (१),

गोपीनाथ (१), अमियकर (२) सदानन्द (१) भीष्म (१), नव कविराज (१), मल्लदेव (१), भगीरथ (१), राजनन्दन(१), भवेश (१), रामनाथ (१, कवि कुमुदी (१), भरत कवि १), वीर नारायण (१), यशोधर १), आदि विभिन्न कविक पद संगृहीत भेटैछ। एहि संग्रहक पन्द्रहटा पद भणिता विहीन अछि जकर रचनाकारक कोनो सूचना नहि प्राप्त होइछ।

भाषा-गीत-संग्रहक सिद्धि नरसिंह, नृप सिंह ओ नृपति सिंह वस्तुतः एकहि व्यक्ति छथि। अतः सिद्धि नरसिंहक पद समूहक इयह प्रमुख आकर ग्रन्थ थीक। एहि संकलनक ऐतिहासिक मूल्य अछि। एहि हस्तलेखक माध्यमे मैथिलीक ज्ञात-अज्ञात अनेक कविक बहुत राश एहन रचना प्राप्त होइछ जे अन्यथा उ लब्ध नहि छल। विद्यापति सँ जे मैथिली काव्य-परम्पराक सूत्रपात भेल तथा ओहि सँ हुनक समकालीन ओ परवर्ती कवि जे अनुप्राणित भेलाह तकर दिग्दर्शनक लेल ई हस्तलेख स्थायी महत्व रखैत अछि। मुद्रित भेला उतर ई ग्रन्थ मध्यकालीन मैथिली साहित्यक मूल्यवान परम्परा, विशेषतः ओकर संरक्षण ओ विकास मे नेपालक योगदानक उदघाटन मे सक्षम हैत।

उपर्युक्त तीनू संग्रह ग्रन्थ कें आधार बनाय एतय सिद्धि नरसिंहक पदक संकलन प्रस्तुत कैल गेल अछि। प्रत्येक पदक अर्थ सेहो दऽ देल गेल अछि। सर्वसाधारण पाठकक लेल ई उपयोगी सिद्ध हैत तकर आशा कैल जा सकैछ। वस्तु

विवेचन मे सर्वत्र पद श्रो गीत कें पर्यायवाची बुझि व्यवहार कैल गेल अछि।

प्रस्तुत ग्रन्थ नेपालक मैथिली साहित्य कें प्रकाश मे आनवाक योजनाक एकटा अंग थीक। एकर संकलन श्रो सम्पादनक क्रम मे उत्साहित केनिहार बहुतो जन छथि। विशेषतः प्रो० रामदेव झा श्रो प्रो० लक्ष्मीकान्त झा त नेपाल यात्रा सँ ग्रन्थक प्रकाशन धरि एहि मे सहयोग देलन्हि अछि। लक्ष्मी बाबू मैथिलीक विकास ने मल्ल राजवंशक देन पर स्वतन्त्र ग्रन्थ लिखि रहल छथि। नेपालक राजनीतिक इतिहासक प्रसंग बहुत राश सूचनाक स्रोत ओह छथि। बन्धुवर नवीन चन्द्र मिश्रक संग आलाप-आलोचना द्वारा अनेक प्रकारें उपकृत छी। वस्तुतः ई स्नेही जन हमर साहित्यिक जीवनक अभिन्न अंग भऽ गेल छथि।

पुस्तक केन्द्र, दरभंगाक कर्णधार श्री दयानन्द झा एहि पुस्तकक प्रकाशन कय निस्सन्देह अपन दुस्साहसक परिचय देलन्हि अछि। मैथिली मे पुस्तक व्यवसाय कें अलाभकर बुझितहुँ एहि प्रकाशन कें हुनक मातृभाषानुरागक अतिरिक्त और की कहल जा सकैछ ?

—श्री शैलेन्द्र मोहन झा
[एम० ए० (द्वय), पी॰ एच०डी०, डी०लिट्०]

विषय-क्रम

Scanned by CamScanner

पृष्ठ 1 तेरह पर तृतीय पंक्ति मे भा० गी० सं० कें 'तड़िपत्त पर लिखल' कहल गेल अछि। मुदा ओ पाण्डुलिपि कागत पर लिखल अछि। प्रमादवश जे ई अशुद्ध छपि गेल अछि ताहि कें विज्ञ पाठक लोकनि सुधारि कऽ पढ़थि से अनुरोध।

सिद्धि नरसिंह मल्ल

मैथिली साहित्यक विकास मे नेपालक योगदान महत्व-पूर्ण अछि। मल्ल राजवंशक छत्रच्छाया मे एहि भाषाक अपूर्व प्रगति भेल। एहि वंशक राजा लोकनि केवल मैथिल विद्वान कें प्रश्रय नहि देलन्हि अपितु स्वयं एहि भाषाक माध्यमे शतशः गीत-नाटकादिक रचना कय आत्मपरितोष प्राप्त कैलन्हि। ओना त हिनका लोकनिक रचनाक विशाल संख्या कें देखि कतिपय विद्वानक इहो धारणा छन्हि जे ई समस्त रचना राज्याश्रित कविक कृति थीक जकरा ओ अपन आश्रय-दाताक नाम दय लिखलन्हि, मुदा कोनो प्रमाणक अभावमे एहि तर्क कें मानि लेबाक समुचित हेतु नहि प्रतीत होइछ।

Scanned by CamScanner

तथापि एहि सँ हुनका लोकनिक मैथिली प्रेम कोनो प्रकारें बाधित नहि होइछ। वस्तुतः विद्यापतिक मधुर गीत—बंगाल, आसाम ओ उड़ीसा सदृश नेपालोक जनमानस कें मोहि लेने छल तथा ओकर प्रसारक मार्ग कें प्रशस्त बना देने छल। मुदा नेपालक राजन्य वर्ग मध्य मैथिली प्रेमक इयहटा कारण नहि भेल। एतय स्मरण राखय पड़त जे नेपालक मल्ल शासक लोकनि कर्णाटवंशीय मिथिला नरेश महाराज हरिसिंह देवक उत्तराधिकारी छलाह। आ' ई मैथिली भाषा हुनका लोकनि कें उत्तराधिकार स्वरूप प्राप्त भेल छलन्हि। तखन एतेक अवश्य जे विद्यापतिक लोकप्रियता, मैथिलीक प्रति हुनक सहज ममत्व कें, साहित्य सृष्टिक प्रेरणा दय स्थायी बना देलक। नेपालमे मैथिलीक महत्त्वपूर्ण स्थानक उल्लेख करैत डा० बागचीक कथन छैन्हि जे "मैथिली नेपालक प्राचीन वंश ओ प्रभाव-सम्पन्न व्यक्ति लोकनिक शिक्षाक भाषा छल।" से एहि मैथिली कें माध्यम बनाय नेपाल मे साहित्य सृष्टिक अटूट शृंखला पर्वत छी। एहि दृष्टियें मल्ल शासक लोकनिक राजधानी—कान्तिपुर वा काठमाण्डू, भक्तपुर वा भातगाँव एवं ललितपुर वा पाटन—साहित्य निर्माणक प्रधान केन्द्र

Scanned by CamScanner

बनि गेल छल। वस्तुतः ई नगर सभ राजनीतिक गतिविधि सँ विशेष संस्कृति ओ कलाक व्यापक प्रतिष्ठानक रूप मे परिणत भऽ गेल छल जतय कवि ओ कलाकारक समादर होन्हि, प्रश्रय ओ प्रोत्साहन भेटन्हि।

एहि मल्ल शासक लोकनि मे मैथिली काव्यक प्रणेता ओ पोषकक रूप मे पाटन नरेश सिद्धि नरसिंह मल्ल कम महत्व नहि रखैत छथि। महाराज सिद्धि नरसिंह मल्लक पिताक नाम हरिहर सिंह छल। हिनक पितामह शिवसिंह अपन वैमात्रेय कें पराजित कय कान्तिपुरक राज्य हस्तगत कऽ लेने छलाह। पश्चात् पाटन पर अधिकार कय ओ दुनुक सम्मिलित सुदृढ़ शासनक स्थापना कैलन्हि। सिद्धि नरसिंह (१६२० ई०—१६६१ ई०) हरिहर सिंहक द्वितीय पत्नी लालमतीक पुत्र छलाह। हरिहर सिंहक मृत्यु पिताक जीवन-कालहि मे असामयिक भेल छलन्हि तथा सिद्धि नरसिंहक जन्म अपन पिताक मृत्यूपरान्त भेल छल। कहल जाइछ जे अपन जन्म सँ पूर्वहि ओ पाटनक राज्याधिकारी घोषित कऽ देल गेल छलाह। वस्तुतः शिवसिंह ई निर्णय कऽ चुकल छलाह जे लालमतीक कोखि सँ पुत्र वा पुत्री जे जन्म लेत

Scanned by CamScanner

सेह पाटनक गद्दी पर बैसत। एकर कारण छल जे शिवसिंह अपन जीवनकालहि मे राज्यक विभाजन कऽ देने छलाह, जाहि आधार पर हुनक मृत्यूपरान्त हरिहरसिंहक प्रथम पत्नीक पुत्र लक्ष्मी नरसिंह कें कान्तिपुरक तथा द्वितीय पत्नीक पुत्र सिद्धि नरसिंह कें पाटनक राज्य प्राप्त भेलन्हि।

सिद्धि नरसिंह मल्लक काव्य प्रेम सँ पाटनक राज प्रांगण मुखरित भऽ उठल। वस्तुस्थिति त ई छल जे नेपालक तीनू शाखाक तीन समसामयिक राजागणक मध्य साहित्य-चर्चा कें लऽकऽ एक प्रकारें प्रतिद्वन्द्विताक भावना छल। भातगांवक महाराज जगज्ज्योतिर्मल्ल द्वारा संस्कृत एवं देशी भाषाक साहित्यक पूर्ण पोषण भेल। हिनक नाम सँ बहुत राश गीत-कविता, तीन-चारिटा भाषा-नाटक, संगीतशास्त्रक मूल ओ अनुवाद एवं टीका ग्रन्थ ओ अन्यान्य निबन्ध पाओल जाइछ। नाटक मे 'कुंज बिहार' ओ 'हरगौरी विवाह' प्रसिद्ध अछि।

हिनकहि आश्रित, मैथिल-कवि पंडित वंशमणि झा 'मुदित कुवलयाश्व नाटक' ओ असंख्य पदक रचना कैने छलाह। वंशमणि कें पश्चात् काठमाण्डूक नरेश प्रतापमल्लक

Scanned by CamScanner

(लक्ष्मी नरसिंहक पुत्र) राजसभा मे देखैत छथिन्ह जतय ओ १५७७ शकाब्द मे प्रतापमल्लक तुलापुरुषदान महोत्सवक अवसर पर 'गीत-दिगम्बर' नाटकक प्रणयन कैलन्हि। प्रताप मल्ल अपनहुँ 'कवीन्द्र'क उपाधि सँ विभूषित छलाह तथा हिनक नाम सँ बहुत राश रचना प्रचलित अछि। ७७३ नेपाल सम्वत् (१६३३ ई०) मे लिखित एक गोट पुस्तकक पुष्पिका मे ओकर लेखक भातगाँवक जगज्ज्योतिर्मल्ल ओ ललितपुरक सिद्धि नरसिंहमल्ल, एहि दुनू व्यक्तिक नाम एक संग देलन्हि अछि। वस्तुतः एहि सभ सँ साहित्य प्रेमक स्वस्थ स्पर्द्धाटा प्रमाणित होइछ।

नेपालक शासक लोकनिक रचना कें देखि, ई सहज प्रतीति होइछ जे मूलतः धार्मिक भावना ओकर प्रेरक रहल। सिद्धि नरसिंह मल्लक विषय मे त कहल जाइछ जे ओ राजा रहितहुँ राजर्षि छलाह, शासक रहितहुँ सन्यासी छलाह तथा राजोचित कार्य सँ विमुख हुनक जीवनक अधिकांश समय धर्मकार्य दिश उन्मुख रहल। वस्तुतः सांसारिकता सँ विमुक्त भए ओ अपना कें देवोपासना मे संयुक्त कऽ देने छलाह। फलतः अपन जीवमकालहि मे ओ समस्त अधिकार अपन पुत्र

Scanned by CamScanner

श्रीनिवासमल्ल क प्रदान कय निद्वन्द्व भऽ गेल छलाह ।

सिद्धि नरसिंह मल्ल कृष्णभक्त छलाह । पाटनक राज प्रांगण मे, निर्मित हिनक कृष्ण-मन्दिर, एही भक्तिक परिणति थीक । एहि मन्दिरक गर्भगृहक चारू देवाल पर, पाथर पर, विष्णु एवं हुनक दशावतारक मूर्ति तथा रामायण ओ महाभारतक कतिपय पंक्ति उत्कीर्ण अछि । एकर अतिरिक्त एही दुनू काव्य सँ ओहि मे अनेको मनोरम दृश्यक नक्काशी कैल गेल अछि । एहि कृष्ण मन्दिरक एक गोट शिलालेख सँ ज्ञात होइछ जे उक्त महाराज द्वारा, आक्रामक शत्रु कें पराजित कैलाक उपलक्ष मे एहि मन्दिरक निर्माण भेल छल । विजयोपरान्त जे उल्लास व्यक्त कैल गेल तकर तुलना परम्परागत राजसूय यज्ञ सँ कैल गेल अछि । एहि महोत्सवक प्रधान पुरोहित विश्वनाथ उपाध्याय नामक एक जन मैथिल छलाह जनिक तुलना वशिष्ठक संग कैल गेल अछि । ई विश्वनाथ उपाध्याय, राजोपदेशक तथा वैदिक मन्त्रक विशिष्ट ज्ञाता छलाह । मन्दिरक शिलालेख मे एहि घटनाक सूचना दैत नेपाल सम्बत् ७५७ फाल्गुन शुक्ल सप्तमी (आर्द्रा पर पुनर्वसु नक्षत्रे आयुष्मान योगे वृहस्पतिवासरे) क उल्लेख कैल

गेल अछि। सिद्धि नरसिंहक महत्व क ख्यापित करैत शिलालेख मे जेना कहल गेल अछि, जे उक्त महाराज युधिष्ठिरो सँ बढ़िकऽ यशस्वी छलाह, जनिक निष्ठा वशिष्ठो सँ महान छल, पराक्रम मे जे अर्जुनक समकक्ष छलाह तथा दानशीलता मे कर्णा जनिक समता कऽ सकैत छलाह। राजाक एहि प्रकारक गुणानुवाद करैत एकटा औरो श्लोक उत्कीर्ण अछि—"राजोचित गुण मे सिद्धि नरसिंहक समता के कऽ सकत? कर्णक जन्म कुमारिक कोखि सँ भेलन्हि, बलि दैत्यक पुत्र छलाह आ' पारिजातक वृक्षक उद्भव पाथर सँ भेल। धर्मपथ सँ विरत राजा नृग शक्ति च्युत भए पृथ्वी पर खसि पड़लाह, परशुराम मातृहन्ता छलाह, अतः सिद्धि नरसिंह सदृश धन्य ओ उदार एवं संसार विजयी दोसर आन के छथि?" वस्तुतः ई उक्ति सभ अतिशयोक्तिपूर्ण रहितहुँ राजाक धार्मिक प्रवृत्तिक रहस्योद्घाटन मे सक्षम अछि।

मुदा आनो देवी देवताक प्रति सिद्धि नरसिंहक समान-श्रद्धा ओ भक्ति प्रकट होइछ। ई अपन इष्टदेवता तुलजा भवानीक अनन्य उपासक छलाह। नेपाल सम्वत् ७६७

Scanned by CamScanner

(वैशाख कृष्ण पंचम्यां तिथौ वृहस्पतिवासरे) मे निर्मित, भण्डारखालक शिलालेख कें एकर प्रमाण स्वरूप उपस्थित कैल जा सकैछ। पाटन मे निर्मित हिनक शिव मन्दिर स्थापत्यक दृष्टियें खास विशेषता सँ समन्वित अछि। एहि मे स्थापित शिवलिंग मे चारू भर शिवक पुरुषाकार चारिटा आकृति खोधल अछि।

तहिना दोसरो धर्मक प्रति हिनक उदार भावना ओ श्रद्धा समन्वित हृदयक परिचय भेटैछ। एकटा शिलालेख में हिनका 'लोकेश्वर चरण सेविता' कहि बौद्धधर्मक बज्रयान शाखाक प्रति हिनक भक्तिभाव कें व्यक्त कैल गेल अछि। पुनः कीर्तिपुरक सिन्धुवाल शिलालेख मे उल्लिखित अछि जे सिद्धि नरसिंह नवनिर्मित मन्दिर मे श्री महाबोधि शाक्यमुनिक मूर्ति स्थापनाक सुअवसर पर पुत्र समेत उपस्थित भेल छलाह।

अपन एही धार्मिक प्रवृति सँ प्रेरित भऽ सिद्धि नरसिंह भारतवर्षक विभिन्न तीर्थस्थानक भ्रमण कैने छलाह। हिनक पौत्री योगमतीक एकटा शिलालेख मे कहल गेल अछि, जे हिनक जीवनक शेष भाग काशी मे व्यतीत भेल। उक्त शिलालेख सँ इहो विदित होइछ जे सिद्धि नरसिंह बौद्ध बिहारक

पुनर्गठन कऽ ओकर कोष एवं भिक्षा सँ प्राप्त आय केर सुव्यवस्था कैने छलाह तथा एकर संगहि बिहारक अधिकार क्षेत्र तथा अव्यवसायी आश्रितक प्रति ओकर दायित्वक निरूपण कैने छलाह।

सिद्धि नरसिंहक इयह धार्मिक भावना साहित्य ओ सांस्कृतिक प्रति हुनक अपार प्रेम तथा कला ओ संगीतक प्रति एकान्त-अभिरुचि मे प्रतिबिम्बित भेटैछ। हिनकहि प्रेरणा सँ रामायणक घटना-क्रम पर आरोपित कार्तिक नृत्य-नाट्यक शुभारम्भ कैल गेल छल जे अद्यावधि नेपालक ग्रामीण जन समाज मे लोकप्रिय अछि। हिनकहि राज्यत्व मे 'गोपीचन्द्र नाटक" ओ "हरिश्चन्द्र नाटक" रचित भेल। हरिश्चन्द्र नाटकक रचयिता छलाह, रामभद्र जनिक पिताक नाम शंकर छल। इयह रामभद्र पश्चात् सिद्धि नरसिंहमल्लक पुत्र श्रीनिवासमल्लक आदेश सँ "ललितकुवलयाश्व मदालसा (वा शिव पार्वती महिमा नृत्य) क रचना कैने छलाह।

सिद्धि नरसिंह मल्लक समय मे मैथिली, साहित्य-रचनाक प्रयोगसिद्ध माध्यम रहल। खास कए पद ओ नाटक त मैथिलीएक माध्यमे लिखल गेल। उपर्युक्त "हरिश्चन्द्र

Scanned by CamScanner

नाटकक प्रसंग मे आगस्टस कौनरेडी, जे १८९१ ई० मे एकर सम्पादन कऽ प्रकाशित करौलन्हि, एहि तथ्यक निर्देश कैने छथि। नेपाल मे मैथिली नाटक ओ पद साहित्यक अजस्त्र भण्डार अछि। से, एक गोट संरक्षकक रूप मे नेपालक अन्य नरेश सदृश, सिद्धि नरसिंहो मैथिलीक एहि साहित्य समृद्धि मे प्रभूत योगदान देलन्हि। कहल जाइछ जे ओ स्वयं अपनहु उच्चकोटिक कवि छलाह। डा० जयकान्त मिश्र हिनक रचित एकटा पूर्ण पदावलीक चर्चा कैने छथि। हिनक पदक भणिता मे हिनक प्रसिद्ध नाम 'सिद्धि नरसिंह' क उल्लेख भेटैछ। मुदा डा० जयकान्त मिश्र 'सिंह नृपति' ओ 'नरसिंह' भणिता सँ युक्त पद कें हिनकहि मानने छथि। केवल 'नरसिंह मल्ल' कहि कऽ हिनक नामोल्लेख, हिनक राज्यकालक (७५७ ने० सं०) एकटा शिलालेखो सँ अनुमोदित होइछ तथापि 'सिंह नृपति' ओ 'नरसिंह'क भणिता सँ प्राप्त पदक प्रामाणिकता संदिग्ध अछि। ओना त भणिताक एहि अनेकरूपता कें सर्वथा अस्वीकारो नहि कैल जा सकैछ। एहि आधार पर 'नृपति सिंह'क भणिता सँ जे पद प्राप्त होइछ तकरहु हिनकहि रचित मानल जा सकैछ।

Scanned by CamScanner

सिद्धि नरसिंहक जे पद एतय उदाहृत अछि तकर प्रमुख आकर स्रोत अछि—'भाषा-गीत-संग्रह'। ई पाण्डुलिपि नेपालक राष्ट्रीय अभिलेखालय मे अनुरक्षित अछि। "तड़िपत पर लिखल ई हस्तलेख सुन्दर तिरहुता मे अछि तथा ई दू सै वर्ष पूर्वक प्रतीत होइछ।" एहि मे विद्यापति एवं अन्य बहुतो कविक, जाहि मे सिद्धि नरसिंहो छथि, एक सै छिआलिश टा पद संकलित भेटैछ। सर्वप्रथम डा० जयकान्त मिश्र अपन मैथिली साहित्यक इतिहास लिखबाक क्रम मे एकरा देखने छलाह तथा एहि संग्रह कें अपन ग्रन्थ मध्य 'कंसनारायण पदावली'क नाम सँ निर्देश कैलन्हि। मुदा एहि हस्तलेखक अनुशीलन सँ एकरा 'कंसनारायण पदावली'क नाम देब युक्ति संगत नहि प्रतीत होइछ। एहि मे अन्तिम ओइनवार मिथिला नरेश लक्ष्मीनाथ-कंसनारायण'क पद त अवश्य भेटैछ, संगहि एहनो कविक पद अछि जे सम्भवतः उक्त नरेशक आश्रित छलथिन्ह तथापि एहि सँ उक्त नामक सार्थकता नहि प्रतिपादित होइछ। एहि मे जँ कंसनारायणेक युग धरिक कवि लोकनिक रचना रहैत तखनहुँ ई नाम विचारणीय होइत, से एहि मे सिद्धि नरसिंहोक पद अछि जे निश्चित रूप सँ कंस-

नारायणक परवर्ती छथि। सिद्धि नरसिंह मल्लक एकटा पद मे भणिताक पंक्ति नहि दय पदक नीचा मे 'श्री सिद्धि नरसिंह मल्ल देवानाम्' लिखि रचनाकारक स्पष्टतः उल्लेख कऽ देल गेल अछि। एतय 'श्री' शब्द युक्त रहने आभासित होइछ जे पद संकलनक समय मे महाराज सिद्धि नरसिंह मल्ल जीवित छलाह। अतः प्रस्तुत संकलन असंदिग्ध रूपें हुनक जीवनकालक प्रमाणित होइछ। एहि संग्रहक नामांकन नेपालक पुस्तकालय मे 'भाषा-गीत-संग्रह' कहि कऽ कैल गेल अछि जे उपयुक्त बुझना जाइछ। ई अवश्य जे 'भाषा-गीत-संग्रह' नामक दूटा अन्यो हस्तलेखक सूचना जयकान्त बाबू अपन ग्रन्थ मे देने छथि और ताहि दृष्टियें एकहि नामक ई तेसर संग्रह भेल।

उपर्युक्त 'भाषा-गीत-संग्रह' मे सिद्धि नरसिंहक भणिता सँ प्राप्त पदक संख्या सात अछि। एकर अतिरिक्त 'नृपसिंह' क भणिता सँ एकटा पद तथा चारिटा पद 'सिंहनृपति' क भणिता सँ उक्त संग्रह मे भेटैछ। 'नृपसिंह'क भणिता बला पद 'रागतरंगिणी' मे सेहो पाठान्तरक संग प्राप्त होइछ। राष्ट्रीय अभिलेखालय मध्य अनुरक्षित 'राग भजन संग्रह'

नामक अन्य पाण्डुलिपि मे एकटा पद 'नृपति सिंह'क भणिता सँ अछि। अतः एही तेरहो पद कें सिद्धि नरसिंहक रचनाक उदाहरण स्वरूप एतय उपस्थित कैल जाइछ। एक कवि ओ काव्य-प्रेमीक रूप मे, कवि-पण्डितक प्रेरक ओ पोषक रूप मे सिद्धि नरसिंहक जे प्रसिद्धि अछि तकर अनुमोदन करैत ई सोचब संगत अछि जे ओ बहुत राश पदक रचना कैने हैताह। मुदा कतेक से त अनुसन्धान सापेक्ष अछि; जखन सभटा पद प्रकाश मे आओत तखनहि ओकर निश्चित परिमाणक बोध हैत।

सिद्धि नरसिंहक काव्यक आदर्श रहलथिन्ह विद्यापति। हुनकहि अनुसरण करैत ओ राधा-कृष्णक लीला विलास कें अपन काव्यक विषय बनौलन्हि। स्वयं विद्यापति एहि दिशा मे महाकवि जयदेवक अनुवर्ती भेलाह। जयदेव अपन 'गीत-गोविन्द' मे हरिस्मरण' क संग 'विलास-कला-कुतूहल'क सरस सामञ्जस्य उपस्थित कय अपन लोकप्रियता कें दूरंगमा ओ चिरनूतना बना गेल छलाह। कृष्णलीलाक ई कमनीय काव्य भक्तकविक सहज उदगार प्रमाणित भेल। भक्ति मूलतः एक गोट रागात्मक अभिव्यक्ति

Scanned by CamScanner

थीक जाहि मे रतिभावक समावेश सहजहि भऽ जाइछ। से 'गीत-गोविन्द' मे हिनक भाव भागवत अछि मुदा भावाभिव्यक्ति विलास-कालक अनुरूप प्रसादिक। हिनक उद्देश्य काव्य रचना करक छलन्हि। भाषाक प्रयोग तदनुरूप भाव मूलक रहल अछि। शृंगार जखन वस्तुमूलक अथवा लोकविषयक होइछ तखन ओ जड़ोन्मुख भऽ जाइछ। मुदा जखन ओ भागवदविषयक रहैछ तखन ओ चिन्मुख भऽजाइत अछि।" एही प्रेम सलिल कें लोक-भाषा-वाहिनी बनाय विद्यापति 'अभिनव-जयदेव'क अनुगत उपाधि कें धारण कैलन्हि। फलतः विद्यापति द्वारा आदि रसक आनुषङ्गिक रूप मे राधा-कृष्ण-पदावली जे पुष्पित ओ फलित भेल सैह हुनक परवर्ती भाषा-कविलोकनिक लेल अनुकरणीय रहल। लीला-विलासक एहि मृदु गान मे भक्ति जेना शृंगारक अनुगत भए प्रकट भेल; धर्म जेना अपन साम्प्रदायिक मतवाद कें तिलांजलि दय कव्यवादक सुषमा सँ मर्मस्पर्शी भऽ उठल। वस्तुतः कृष्णलीलाक ई कमनीय काव्य, कविहृदयक अकृत्रिम भावसुधा सँ आप्यायित भए भारतीय वाङमयक चिरन्तन रसतीर्थक रूप मे धारावाही भेल अछि।

Scanned by CamScanner

सिद्ध नरसिंह, विद्यापतिक एहि पद वैभव स पूर्णतः परिचित ओ प्रभावित छथाह। हुनकहि अनुवर्ती भए ओ राधा-कृष्णक प्रणय लीला कें मर्त्यभौतिक सूक्ष्मातिसूक्ष्म वैचित्र्य ओ माधुर्यक संग अवतरित कैलन्हि। एहि लेल विद्यापतियेक भाषा ओकर माध्यम भेल। विद्यापतियेक अनुरूप हिनक अभिव्यंजना-भंगिमा मे सामान्य नर नारीक प्रणय-लीला वर्णनक निपुणता लक्षित होइछ। विद्यापतिक 'सुनागर' कृष्ण ओ 'वरयौवति' राधा, सिद्धि नरसिंहोक काव्य पृष्ठ पर पार्थिव नायक-नायिका सदृश लोक जीवन सँ मिझरा गेलाह अछि। मुदा हुनक ई लौकिक रूपाकृति पूर्ववर्ती काव्यधाराक आदर्श पर अध्यात्म-तत्व-दृष्टिक एक गोट ज्योतिमय दीप्ति ओ कविकल्पना द्वारा अत्यधिक मनोहारी ओ महिमान्वित भऽ उठल अछि। फलत प्राकृत प्रेमक ई मधुर गान मूलतः अप्राकृत प्रेमक दिव्य संगीत थीक।

सिद्धि नरसिंहक एहि पद सभ मे नौका लीला, दानलीला मान-अभिसार, विरह आदि विभिन्न पक्षक चित्रांकन भेल अछि। नौका लीला ओ दानलीलाक पद मे छद्ममिलनक अतीन्द्रियता ओ वाग्वैदग्ध्यक निपुणता मनोरम अछि। मानक

पद मे प्रेमिकाक अनन्यता ओ तथा ओकर अभिसार-पराभव मे परीक्षित प्रेमक परिशुद्धता चिर प्रमाणित अछि; तहिना विरह गीत मे दैहिक स्पर्श सुखक शुभेच्छापूर्ण प्रसंग कें लऽ कऽ प्रिय-विश्लेष दुख अनन्त व्यापी भऽ उठल अछि। ई प्रीति-गीत अपन भावगत विशिष्टता, हृदय स्पर्शनक सक्षात्वृत्तिता ओ लोकानुभूतिक सहजता सँ उद्भासित भऽ उठल अछि। एकर संगहि एकर काव्यपक्ष सेहो कलापूर्ण अछि। भक्तक अन्तर्भाव जेना कविक विदग्धता ओ विद्वता सँ चमत्कृत भऽ उठल अछि। सत्य त ई जे कविक प्रत्येक पद काव्यक दृष्टि सँ महर्घ रत्न सदृश अछि जकर अर्थ-समृद्ध परिणति आनन्दक उद्भावना करैत अछि, शब्दचयन, छन्दक धुनि ओ लय संगीतक सृष्टि करैत अछि तथा लोक जीवन सम्पृक्त अभिव्यक्ति-सहजता ओकर दुर्निवार प्रभाव कें स्थायित्व प्रदान करैत अछि। कविक ई प्रकीर्ण पद समूह स्वतः आस्वादनीय अछि।



गीतावली

Scanned by CamScanner

मालव

विष सेमार पवनासन हारे।
पावक सम धनि मान तुषारे॥
नोरहिँ काजर बहि महि परइ।
ससिँ बभि मसि खञ्जन जनि वमइ॥
ए पहु कह दहुँ कओन उपाइ।
अपरुव वेदन की करति साइ॥
त्रिपुरासुर रिपु रिपु सर सहइ।
अवधि आसेँ केवल जिव बहइ॥
हृदय सिनेह दहन सन दहइ।
कहहि न पारिअ जत दुख सहइ॥
सिद्धि नरसिंह भन सुनि सखि वानी।
सिनेह राष प्रभु पर दुख जानी॥

—भा० गी० सं०, पद संख्या—१६

Scanned by CamScanner

[अर्थ—कमल, सेमार ओ साप (जाहि तुषार सँ) हारि गेल अछि, (ताहि) तुषार कें धन्या (नायिका) अग्नि सदृश (दाहक) बुझैत अछि। नोर (बहला) सँ (आँखिक) काजर बहि कऽ (धोखरि कऽ) पृथ्वी पर खसैत अछि, जेना (मुख रूपी) चन्द्रमा मे वास कए (नयन रूपी) खञ्जन मोसिक वमन कऽ रहल हो। हे प्रिय ! कहि दिअ (जे एकर) की उपाय ? (एहि विरह जन्य) अपूर्व वेदना सँ ओ (नायिका) की करत ? (ओ) कामदेवक वाण (क प्रहार) कें सहि रहल अछि। केवल अवधिक आश मे जीवन (धारा) प्रवाहित छैक (अर्थात ओ केवल अहाँक अएबाक निर्धारित अवधिक आश लगौने प्राण धारण कैने अछि।) हृदयक (तरल) स्नेह अग्नि सदृश प्रज्वलित भऽ रहल छैक। (ओ) कतेक दुख भोगि रहल अछि से कहि नहि सकैत छी। सखीक वचन कें सुनि सिद्धि नरसिंह कहैत छथि—प्रभु (श्री कृष्ण) दोसराक दुख कें जानि स्नेह रखैत छथि।]

Scanned by CamScanner

२

कोडार

रहए न धैरज हेरि मुख पङ्कज लोभी लोचन भृङ्गे ।
तुअ कुचयुग जनि गढ़ल परसमनि कनक धराधर शृङ्गे ॥
कामिनि मान न करह सब ठामा ।
लाष मदन सर जिव एहि अवसर आवे विवेक तुअ रामा ॥
आरति सञ्चर मनमथ कुञ्जर भेल मगन गुन पङ्के ।
हृदय निकारुण तुअ अति दारुन जुग भरि रहल कलङ्के ॥
उचित न मानल मोर अकरम बल जत हम करु परकारे ।
पिअ विनय रतने देह मान धन भन सिद्धिनरसिंह सारे ॥

—भा० गी० सं०, पद सख्या-२०

[अर्थ — अहाँक मुखकमल कें निहारि नयनरूपी लोलुप भ्रमरकेँ धैर्य नहि रहि जाइछ। अहाँक दुनू उरोज लगैछ जेना सोनक पहाड़क शिखर पर स्पर्शमणिक रचना रहय। हे कामिनी ! सभ ठाम मान जुनि करू। कामदेवक असंख्य वाण सँ (आहत हमर) प्राण एहू समय मे जीबि रहल अछि। (तइओ त) अहाँकें विवेक हो। आर्त्त भेल संचरण करैत कामदेव रूपी गज अहाँक गुणक पाँक मे निमग्न भऽ गेल। (ओकर उद्धार कहां धरि करितिऐक जे) अहाँक हृदय अत्यन्त कठोर बनल अछि। एहि सँ युग-युगान्तर धरिक लेल कलंक रहि जैत। हम जतेक चेष्टा कैल हमर कर्म दोषें अहाँ तकरा उचित नहि मानल। प्रियतमक विनय (रूपी) रत्नकेर (विनिमयमे) अपन मान रूपी धन अर्पित करू। सिद्धि नरसिंह एहि सार वस्तु कें कहैत छथि।]

Scanned by CamScanner

आसावरी

३

सजल नलिनि दल सेजे।
देह दह हुतबह तेजे॥
तरब कओन परकारेँ।
विरह पयोनिधि पारे॥
सौध सहस सखि पासे।
जनि सुन वन भेल वासे॥
सुमरि सुमरि तसु रङ्गे।
अनुखन जनि हरि सङ्गे॥
तइअओ हनय पँचवाने।
बिनु हेतुँ हमर पराने॥
उतरत सबे दुख भारे।
भन सिद्धि नरसिंह सारे॥

—भा० गी० सं०, पद संख्या—२१।

Scanned by CamScanner

[अर्थ—सजल कमल पत्रक शय्या ! (मुदा) देह (जेना) अग्निक ज्वाला सँ दहकैत अछि। विरह समुद्रक संतरण कोन प्रकारें करब ? महल मे सहस्रो सखी लग मे छथि तथापि (एकटा प्रियतमक अभाव मे) जेना शून्य वनमे बसैत होइ। हुनक केलि-क्रीड़ा कें स्मरण कए लगैछ जेना हरि (श्री कृष्ण) निरन्तर संगे होथि। तथापि पंच-वाण अपन (अपन पांचो वाण सँ) अकारण हमर प्राण कें बेधैत छथि। सिद्धि नरसिंह (नायिका सँ) सार (वस्तु) कहैत छथि जे समस्त दुखक भार उतरि जैत (अर्थात् हरिक समागम भेने कोनो कष्ट नहि रहत।]

Scanned by CamScanner

विभास

४

पन्नग भूषण मलय पवन अधिक होअ उदासे।
सजल सैवल मानसँ केवल चाँदन चाँद हुतासे॥
साजनि पुरुब सञ्चित पापेँ।
पाओल मानिक विधि अकामिक हरल दए संतापे।
मान भवन जैसन कानन विषय विष समाने।
मदन परम निर्दय हृदय मरम मारल वाने॥
करह सुजन सङ्गम जतन जेँ मोर रह पराने।
सुमुखि सुकृते मिल प्रकट बेकत सिद्धि नरसिंह भाने॥

—भा० गी० सं०, पद संख्या २२

Scanned by CamScanner

[अर्थ पन्नगक भूषण बला (अर्थात सर्प के भूषण सदृश धारण कैनिहार) मलय पर्वत पर सँ चलल बसात सँ कष्टे होइछ। सेमार केवल सरोवरे मे सजल अछि, (एतय त) चानन ओ चन्द्रमा (सेहो जेना) आगि हो। हे साजनि ! पूर्व संचित पापक कारणें, प्राप्त कैल (प्रियतम रूपी) माणिक्य केँ अकस्मात हरण कय विधाता संताप दऽ गेलाह। भवन जेना कानन रहय तेना मानल आ' विषय केँ विषवत्। कामदेव अत्यन्त कठोर हृदय छथि, मर्म पर वाणक आघात कैलन्हि। (हे साजनि !) सुजन (श्री कृष्ण) क संग समागमक यत्न करह जाहि सँ हमर प्राण रहय। सिद्धि नरसिंह कहैत छथि सुकर्में सँ सुमुखी प्रकट ओ व्यक्त भए भेटैत छथि ।]

५

कओने कलावति रे रे दृढ़ गुने।
बाँधल हमर पुरुब पुने॥
निमिष आँतर जहि रे रे साजनि।
मोरें मने सहस जोजन जनि॥
हृदय धरब आबे रे रे कओने परि।
कतहु न देखिअ निठुर हरि॥
नयन गरए जल रे रे पथ हेरि।
गुन गन सुमरि सतओ बेरि॥
हनए मनोभव रे रे पुनु पुनु।
अनुखन विरह विकल तनु॥
धैरज पाओब रे रे हितजन।
तुअ गुने सिद्धि नरसिंह भन॥

—भा० गी० सं०, पद सख्या -- २३

[अर्थ—कोनो कलावती अपन दृढ़ बन्धन मे हमर पूर्वक पुण्य कें बान्हि लेलक ? हे साजनि ! निमिष भरिक अन्तर हमरा मनमे जेना सहस्र योजनवत् भऽ जाइत छल। (सैह आइ जखन वस्तुतः दूर चल गेल छथि त) आब हम कोन तरहें धैर्य धारण करब, जखन कि निष्ठुर हरि (श्री कृष्ण) कें कतहु नहि देखैत छिऐन्ह। बाट तकैत, आँखि सँ नोर बहि रहल अछि। सैकड़ो बेर गुण सभक सुमिरन करैत छी। कामदेव बेर-बेर बेधि रहल छथि। शरीर प्रतिक्षण विरह सँ विकल अछि। धैय रखने, अहाँ अपनहि गुण सँ, अपन हितैषी (श्री कृष्ण) कें प्राप्त करब, सिद्ध नरसिंह (एहि विषय कें) कहैत छथि।]

Scanned by CamScanner

६

बिनु भय मन धरि कयल सरन हरि
आबे तुअ बुझल उदासे।
जे आबे जिव तह अधिक पेयसि रह
तसु सङ्गे करह बिलासे॥

माधव कि कहब हमें तोँह रामे।
जे जत अछल भल सबे विपरित भेल
हमर करम परिनामे।
प्रथम जानल हमे परम मुगुध मने
हम सम तुअ नहि देहा।
वचन अमिअ वम हृदय कुलिस सम
भलेँ बिधिँ बुझल सिनेहा॥
परिमल बिस लेखि मधुमालति देखि
मधुकर की करत पाने।
दुसह वेदन तेज हरिपद जुग भज
नृप सिद्धि नरसिंह भाने॥

—भा० गी० सं०, पद संख्या-२४।

Scanned by CamScanner

[अर्थ—मन मे कोनो प्रकारक भय नहि राखि, हे हरि ! हम अहाँक शरणापन्न भेलहुँ। (मुदा) आब बुझल जे अहाँ हमरा प्रति विरक्त छी। जे आब प्राणहु सँ बढ़ि (अहांक) प्रेयसी अछि तकरहि संग विलास करैत छी। हे माधव ! हम (जे) रमणी (राधा), अहाँके की कहब ? जे जतेक नीक छल से सभटा हमर कम-दोष सँ प्रतिकूल भऽ गेल। अत्यन्त विमूढ़ हम, पहिने बूझल जे हमरा सदृश (प्रिय) अहाँकें दोसर (नायिकाक) शरीर नहि अछि। मुदा आब नीक जेकाँ अहाँक स्नेह कें बुझि लेल अछि, जे (अहाँक) वचन मे त अमृतक उद्गार अछि मुदा हृदय बज्र सदृश (कठोर) अछि। परिमल कें विषवत् बूझि मधुमालती कें देखि कऽ मधुकर की पान करत ? सिद्धि नरसिंह (नायिका सँ) कहैत छथि, (एहि विरह जन्य) दुस्सह वेदना कें त्यागि हरि (श्री कृष्ण) क पदद्वयक भजन करू।]

Scanned by CamScanner

भूपाली

७

अएलाहुँ गेलाहुँ ई भेलि साति ।
कुपहु सङ्गे गमाउलि राति ॥
भमर बूझ कमलिनि कला ।
कीट कँपचय कुसुम दला ॥
न कच आकुल न कुचँ रेह ।
नहि पराभवें झामर देह ॥
जौवन रूप कला सवँ आगरि ।
नाह गमार कि करति नागरि ।
(श्रीसिद्धि नरसिंहमल्लदेवानाम् ।)

—भा० गी० सं०, पद संख्या—२६ ।

[अर्थ आवागमन कैल तकर ई दण्ड भेटल। गमार पहुक संगे राति बिताओलि। भ्रमर ने कमलिनीक सौन्दर्य कें बुझैछ! कीड़ा त कुसुमक दल कें कपचिते अछि। ने त केश बिखरल, ने नख-क्षते भेल आ'ने पराभव सँ शरीरे झामर भेल। यौवन, सौन्दर्य एवं कला, सभक आगरि नायिका! (मुदा जखन) नाथे गमार हो तऽ सुरसिका की करति ?]

विशेष—एहि पद मे भणिताक पंक्ति नहि अछि, मुदा पदक नीचा मे 'श्रीसिद्धिनरसिंहमल्लदेवानाम्' लिखि एकर स्पष्टतः निर्देश अछि जे ई पद 'सिद्धि नरसिंहमल्ल'क छन्हि।

मालव

८

मास पखेँ उगए कलानिधि उगए अपन कए साज।
तुअ मुख सम नहि पावए तेँ खिन मने गुनि लाज॥
गिम रूप रमनि कहब कत कम्बु कएल जल झाँप।
पवन चलित नव पङ्कज कुच-कोरक डरेँ काँप॥
सामर चामर निन्दए सुन्दर चिकुर कलाप।
भौंह मनोहर कि कहब कामे तेजल निअ चाप॥
मन धाओल पाओल नहि आसा न तेजए लोभ।
एसनि रमनि नृपसिंह कह हरिक निकट पए सोभ॥

—भा० गी० सं०, पद संख्या—५०।

[अर्थ—मास मे, पक्ष मे, चन्द्रमा अपन सभ सज्जा (कला) क संग (कामिनीक मुखक समता पयबाक प्रयास मे) उगैत अछि किन्तु अहाँक मुखक समता नहि पाबि (दोसर पक्ष मे) लजा कए खिन्न-मन भऽ जाइछ। हे रमणी! (अहाँक) ग्रीवाक रूपक (विषय मे) कतेक कहब? शंख लज्जित भए जल मे निमग्न भऽ गेल। (तहिना) पवन-चालित नव-कमल (अहाँक) कुच-कलीक भय सँ काँपि रहल अछि। (अहाँक) सुन्दर केश-राशि कारी चामरक निन्दा करैत अछि। (अहाँक) मनोहर भउँहक (विषय मे) की कहब? (बुझि पड़ैछ जे ओकरहि कारणें) कामदेव अपन धनुष कें छोड़ि देलन्हि। मन (अहाँक पाछाँ) दौड़ल, मुदा पकड़ि नहि सकल। तथापि (अहाँकें प्राप्त करबाक) लोभ जे अछि से आशा कें नहि छोड़ि रहल अछि। नृसिंह कहैत छथि जे एहि प्रकारक रमणी हरि (श्री कृष्ण)क लग मे रहला सँ शोभायमान होइत छथि।]

[विशेष—ई पद 'रागतरंगिणी' मे (पृष्ठ—७३-७४)

निम्नलिखित पाठान्तर ओ पंक्ति-व्यत्ययक संग उपलब्ध होइछ—

माँसे पखें उगए कलानिधि लेए सकल निज साज ।
तुअ मुख सम नहि देखिअ तें खिन मनें गुनि लाज ॥
कहदहुँ कओन पुरुष धनि जाहि कर रह अनुराग ।
के अछ एहि महितल जे अरजल एहेन भाग ॥
सामर चामर निन्दए कोमल केस कलाप ।
भौंह मनोहर कि कहब कामें तेजल सर चाप ॥
पवन चलित नव पल्लव कुच कोरक तरें काप ।
धके धाओल नहि पाओल आशा लुबुधल लोभ ।
ओहनि रमनि नृपसिंह कह हरिहि निकट पए सोभ ॥

Scanned by CamScanner

९

मालव

जाहि देसँ पिक पञ्चम नहि गाबए कुसुमित नहि कानने।
छव ऋतु मास भेद नहि जानए सहजहि अवल मदने ।।
सखि हे सेहे देश गेला पिआ मोरा।
रसमति वानी जतहि न जानए सुनिअ प्रेम बड़ थोरा।
कहलिओ कहिनी जतए न बूझय इङ्गित कि करत काजे।
कओने परि ततए रतल मोर बालम्भु गुनि भए निगुन समाजे ।।
की अपना कें लघु कए मानब कि कहब तन्हिक बड़ाइ।
की हमे गरुवि गमारि सहज तह की रति विरत कन्हाइ ।।
सिंह नृपति कह धैरज कए रह हरिक चरण कर सेवा।
पड़ल अनाइति ते छथि अनतए बालभु दोस न देवा ।।

—भा० गी० सं०, पद संख्या—१२१।

Scanned by CamScanner

[अर्थ—जाहि देश मे कोइली पंचम (स्वर मे) गान नहि करैछ, (जतय) कानन मे फूल नहि फुलाइछ, (जतय) छवो ॠतु ओ विभिन्न मासक भेद नहि जनैत अछि (अर्थात् सालो भरि एकहि रंग बुझि पड़ैछ) ओर (जतय) कामदेव स्वभावतः निर्बल छथि। हे सखी ! हमर प्रिय ताही देश कऽ गेला जतय केओ सरस वाणी नहि जनैछ। सुनैत छी, (जतय) प्रेम बड़ थोड अछि। जतय कहलो बात केओ नहि बुझैछ (फेर) संकेत कोन काज करत ? हमर बल्लभ ओतय कोन प्रकारें आसक्त भऽ गेलाह अछि ? गुणी भऽ कऽ ओ निर्गुणक समाज मे (कोना छथि) ? की हम अपना कें हीन कऽ कऽ बुझू अथवा एकरा हुनक बड़प्पन कहू ? की हम स्वभावतः बड़ गमारिन छी ? वा कृष्णे रति-विरत भऽ गेलाह अछि ? सिंह नृपति कहैत छथि—धैर्यक संग रहि हरिक चरणक सेवा करू। ओ पराधीन छथि तें अन्यत्र छथि एहि लेल बल्लभ कें दोष नहि दिओन्ह।]

विशेष—प्रस्तुत पद निम्नलिखित पाठभेदक संग नेपाल पदावली' (द्रष्टव्य-राष्ट्रभाषा परिषद् पटना द्वारा प्रकाशित, विद्यापति पदावली, प्रथम भाग, पृष्ठ–३६९–३७०, पद संख्या–२६२) मे सेहो पाओल जाइछ—

Scanned by CamScanner

जाहि देस पिक मधुकर नहि गूजर कुसुमित नहि कानने।
छब ऋतु मास भेद नहि जानए सहजहि अबल मदने॥ ध्रु०॥
सखि हे से देस पिअ गेल मोरा ।
रसमति बानी जतय न जानिअ सुनिअ पेम बड़ थोरा॥
कजिओ कहिनी जतए न बूझए की करति अङ्गित काजे।
कओन परि ततए रतल अछ बालभु नि (र) भय निगुण समाजे।
हमे अपना के धिक कए मानल कि कहब तन्हिकि बड़ाइ।
कि हमे गुरुबि गमारि (नि) सबतह कि रति विरत कन्हाइ॥

—भनइ विद्यापतीत्यादि॥

—एहि पद मे भणिताक पंक्तिक अभाव अछि मुदा 'भनइ विद्यापतीइत्यादि'क संकेत द्वारा ई स्पष्ट होइछ जे ई विद्यापतिक रचना छन्हि। एहि पदक आकर स्रोत 'नेपाल-पदावली' कें अकृत्रिम पद संग्रह मानि एहि मे प्राप्त विद्या-पतिक पद कें विशुद्ध मानल जाइत अछि। मुदा प्रस्तुत पद कें उपर्युक्त 'भाषा-गीत संग्रह' मे 'सिंह नृपति'क भणिता सँ पबैत छी। भाषा-गीत-सग्रहोक प्राप्ति स्रोत नेपाले थीक। तैं एकरहु अकृत्रिमता पर अविश्वास नहि कैल जा सकैछ। एहि स्थिति मे, एहि दुनू संग्रहक पद मे ककरा प्रामाणिक मानल जाय? विद्यापति ओ सिंह नृपति मे एकर वास्त-विक रचयिता के छथि? सभ सँ विचारणीय विषय त ई जे नेपाल पदावलीक अकृत्रिमता ओ विशुद्धता कतेक दूर धरि अक्षुण्ण रहैछ?

१०

दुइ तनु एक जिअ
से पिअ निठुर हिअ
एकहि नगर परदेसिआ। ए गे माइ हे।
के जान कओने कहु
ते रुसि रहल पहु
आन दिन सनि न बिहुँसिआ। ए गे माइ हे।
सून दसओ दिसा
कैसे कए खेपबि निसा
आज विरत मोर रसिआ। ए गे माइ हे।
सिंह नृपति कह
धैरज कए रह
हरि मने तोहहि पेआसिआ। ए गे माइ हे।

—भा० गी० सं०, पद संख्या - १२२

[अर्थ—दू शरीर आ' एक प्राण। (मुदा) से प्रिय (आइ) कठोर-हृदय भऽ गेल छथि। एकहि नगर मे परदेशी (बनल) छथि।

के जनैत अछि ! के कहत ? जे एहि (कारण) सँ प्रियतम रूसि रहला अछि। आन दिन जकाँ प्रसन्न नहि छथि।

दशो दिशा शून्य अछि, कोना कऽ राति खेपबि ? आइ हमर रसिक विरक्त छथि।

सिंह नृपति कहैत छथि, धैर्य राखू, हरिक मन मे अहीं प्रेयसी थिकअन्हि।]

Scanned by CamScanner

११

राजविजय

हे मधइश्रा

एँ बेरि जेएवा देहे नीकेँ।
पुनु पुनु आओब बीके॥
दधि दुध हमर पसारे।
दान तोहर अधिकारे॥
देओ मए मोतम हारे।
तैअओ न घरह कँडहारे॥
पहुँ मोर चिर परवासे।
बिसरल मदन तरासे॥
सिंह नृपति कह सारे।
भज धनि नन्दकुमारे॥

—भा० गी० सं०, पद संख्या—१२३।

Scanned by CamScanner

[अर्थ—हे माधव ! एहि बेर नीक जेकाँ (फिरि कऽ) जाय दिअ । फेर-फेर (दूध–दही) बेचबाक लेल आएब । दही दूधेक हमर व्यापार अछि आ' दान (लेब) अहाँक अधिकारे अछि । हम मोतीक हार दैत छी, मुदा तइयो अहाँ नाव (खेबि कऽ पार करबाकलेल) करुआरि नहि धारण करैत छी । हमर प्रियतम चिर प्रवासी छथि,. कामदेवक कष्ट कें (अर्थात् हमरा कामदेव कतेक कष्ट दैत छथि) बिसरि गेल छथि । 'सिह नृपति' सार वस्तु कें कहैत छथि, हे धनि ! नन्दकुमार श्री कृष्णक भजन करू ।]

Scanned by CamScanner

१२

असावरी

बरु लेहे कन्हाई करह पार।
लह लाष मुदरिआ कोटिहार॥
जलद जाल दिग मग अँधार रे।
आज ओर मोरा दधि पसार॥
विषम जमुना नरि कुलँगि घाट रे।
साँझ परति वन माँझ बाट॥
सिंह नृपति कह सुन सयानि रे।
सबे परिहरि भज साराँगपानि॥

भा० गी० सं०, पद संख्या—१२४

[अर्थ -हे कन्हैया। भनहि लाखो मुद्रिका ओ करोड़ो हार लिअ (मुदा) हमरा (नदी) पार कऽ दिअ। सघन मेघ सँ दिशा ओ बाट अन्धकारयुक्त अछि। आइ हमर दहीक बेचब सेहो समाप्त भऽ गेल। भयंकर यमुना नदी आ' तकर ई कुलंग घाट। साँझ पड़ि जैत आ' वन दऽ कऽ बाट छैक। सिंह नृपति कहैत छथि, हे सयानि ! सुनू, सभ कें छोड़ि सारंगपाणि (श्री कृष्ण) क भजन करू।]

Scanned by CamScanner

१३

नट

कैसे कए बेसब एहि देश।
एहि ऋतु पिया परदेश॥
सगुण करैते दिन गेल।
दिवस बरिस सम भेल॥
सपने आएल चलि गेल।
दिठि भरि देखिअ न भेल॥
रयणि भेल मोरि काल।
सुमरि सुमरि हिय साल॥
कथि लाइ लवल सिनेह।
जीवहि परल संदेह॥
नृपति सिंह एह भान।
विरहिनि वेदन जान॥

—राग भजन संग्रह, पद संख्या—५१

[अर्थ—कोना कS एहि देश मे रहब ? (जखन कि) एहि ऋतु मे पिया परदेश मे छथि। सगुण उचारैत दिन बीतिगेल। (एक-एक) दिन, वर्ष सदृश भS गेल। सपना मे (ओ) अएलाह आ' चल गेलाह। भरि आँखि देखियो ने भेल। राति हमरा लेल काल भS गेल। मन पाड़ि-पाड़ि हृदय कें पीड़ा होइत अछि, । ई नव स्नेह कोन काजक ? (जाहि सँ) प्राणों सन्देह मे पड़ि गेल। नृपति सिंह ई कहैत छथि, (ओ) विरहिणीक वेदना कें बुझैत छथि।

सन्दर्भ-ग्रन्थ

१-भाषा-गीत-संग्रह [पाण्डुलिपि]

२-राग-भजन-संग्रह [पाराडुलिपि]

३-ए हिस्ट्री आफ मैथिली लिटरेचर, जिल्द—१,
लेखक-डा० जयकान्त मिश्र, इलाहाबाद, १९४९ ।

४-मेडिएभल नेपाल, भाग-२, लेखक-डो० आर० रेग्मी, कलकत्ता – १९६६ ।

५-रागतरंगिणी, सम्पादक-राजपंडित बलदेव मिश्र, दरभंगा १९३४ ।

६-विद्यापति गोष्ठी (हिन्दी संस्करण) लेखक डा० सुकुमार सेन, लहेरियासराय—१९६६ ।

७-विद्यापति-पदावली, प्रथम खण्ड, प्रकाशक-राष्ट्रभाषा परिषद पटना, १९६१ ।

Scanned by CamScanner

● प्रकाशक :—
पुस्तक केन्द्र, दरभंगा
● मूल्य :—
तीन टाका मात्र

Scanned by CamScanner